3.3.2 Number of research papers per teachers in the Journals notified on UGC website during the last five years (10)

Title of paper	Name of the author/s	Department of the teacher	Name of journal	Year of publication	ISSN number	Link to the recognition in UGC enlistment of the Journal		
						Link to website of the Journal	Link to article/paper/abstract of the article	Is it listed in UGC Care list/Scopus/Web of Science/other, mention
Vidnyapan Aur Hindi Bhasha	Prof. J. M. Pathan	Hindi	Power Of Knowledge, 4th Amendment Regulation,2016.Under6.05(1)Of UGC	Dec-18	2320-4494	International Multilingual Research Journal		4th Amendment Regulation,2016.Under 6.05 of UGC
Cinema Aur Patkatha-Lekhan	Prof. J. M. Pathan	Hindi	Research Journey, Multidisciplinary Peer Reviewed & Indexed Journal	2-Feb-19	2348-7143	www.researchjourney.net		Multidiciplinary Peer Reviewed & Index Journal
Adhunik Hindi Sahitya Me Dalit Vimarsh (Premchand Ke	Prof. J. M. Pathan	Hindi	Research Journey, Multidisciplinary Peer Reviewed & Indexed Journal	Feb-19	2348-7143	www.researchjourney.net		Multidiciplinary Peer Reviewed & Index Journal
Role of IQAC In Higher Educational Institute	Prof. J M. Pathan	Hindi	Research Journey, Multidisciplinary Peer Reviewed & Indexed Journal	Sept. 2019	2348-7143	www.researchjourney.net		Multidiciplinary Peer Reviewed & Index Journal
The Role Of ICT In Higher Education	Prof. J. M. Pathan	Hindi	Research Journey, Multidisciplinary Peer Reviewed & Indexed Journal	Dec-19	2348-7143	www.researchjourney.net		Multidiciplinary Peer Reviewed & Index Journal
Sahitya Aur Samaj Me Mahila Sashaktikaran Vimarsh	Prof. J. M. Pathan	Hindi	Research Journey, Multidisciplinary Peer Reviewed & Indexed Journal	Jan-20	2348-7143	www.researchjourney.net		Multidiciplinary Peer Reviewed & Index Journal

Prof. Pathan. J. M
H. O. D. Hindi

Principal
Adv.B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed

ISSN 2320 - 4494
RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

Volume : II Issue : III, Oct. to Dec.- 2018

ARTS | COMMERCE | SCIENCE | AGRICULTURE | EDUCATION | MANAGEMENT | MEDICAL | ENGINEERING & IT | LAW | SOCIAL SCIENCES | PHYSICAL EDUCATION | JOURNALISM | PHARMACY

Editor

Sarkate Sadashiv Haribhau

Email : powerofknowledge3@gmail.com, shsarkate@gmail.com

Principal
Adv. B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed

विज्ञापन और हिंदी भाषा

प्रा. पठाण जयनुल्लाखान
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी. ता. आष्टी जि. बीड

भूमंडलीकरण के◌इस दौर में विज्ञापन कला और भाषा दोनों में चोली-दामन का साथ है। किसी भी विज्ञापन की प्रस्तुती बिना भाषा के नहीं हो सकती, चाहे◌इशारों की भाषा क्यों न हो, उसमें भाव विचार और संप्रेषण अर्थात भाषा होती है। भाषा, मनुष्य संस्कृति की अमूल्य देन है। भाषा के◌माध्यम से मनुष्य अपने मन की भावनाएँ व्यक्त करता आया है। मनुष्य संस्कृति निर्माण में भाषा का बहुत बडा योगदान रहा है। भाषा निर्माण से पहले भी मनुष्य अपनी बात दूसरे◌मनुष्य तक पहूँचाने में प्रयत्नशील था। मनुष्य अपने जीवन की घटना, प्रसंग, अनुभव या विशेष चीज की जानकारी दूसरों पर प्रकट करना चाहता है। वह कोई विशेष बात की जानकारी ज्ञापित करना चाहता है तब वह बात घविज्ञापनङ कहलाती है।

घविज्ञापनङशब्द अंग्रेजी के◌ङAdvertisingङका हिंदी रुपान्तरण है। अंग्रेजी में इसका तात्पर्य To turnङअर्थात घकिसी तरफ मुडनेङ से होता है। थोडे◌में वि+ज्ञापन से विज्ञापन शब्द की निर्मिती हुई है। घविङ का अर्थ है घविशेषङ और ज्ञापनङका अर्थ है - विशेष चीजों का ज्ञान कराना अर्थात विशेष रुप से जानकारी देना। संक्षेप मे घ्ङमाध्यम विशेष की सहायता से जनता के◌ मन को किसी बात-विशेष की और मोडना विज्ञापन या अॅडव्हर्टाइज कहलाता है। सैल्डन के◌अनुसार घ्ङविज्ञापन वह व्यावसायिक प्रक्रिया है, जिसमें मुद्रित शब्दों मे विक्रयवृध्दी, लोकप्रियता एवं विश्वसनीयता प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

केनन एवं विचर्ट के मतानुसार घ्ङविज्ञापन उन सभी श्रव्य्-दृश्य् मौखिक, मुद्रित संदेशों से सम्बन्धित होता है, जो पत्र पत्रिकाओं, फिल्मों, रेडिओ, टी.वी, परिवहनों एवं मार्ग पर टंगे दृश्य्-पटलों के◌व्दारा प्रदर्शित किए जाते हैं। इसका उद्देश्य उपभोक्ताओं के◌क्रय संबंधी निर्णयों एवं क्रय शक्तियों को बढाने से जुडा होता है।ङङ

विज्ञापन का आकर्षण सर्वत्र व्याप्त है। इसके◌मोह जाल से बडे से बडा या छोटे◌से छोटा व्यक्ती भी नहीं छूटा है। भूमंडलीकरण के◌कारण उपभोग्य वस्तुओं का उत्पादन जितना तेजी से बढ रहा है उतनी ही तेजी से इन उपभोग्य वस्तुओं के◌विपणन हेतु विज्ञापन अति आवश्यक साधन बन गया है। किसी नई वस्तु का निर्माण होते ही उसके विज्ञापन हेतु कंपनियाँ विज्ञापन एजन्सियों से सम्पर्क करती है और ये एजन्सियाँ संचार माध्यमों व्दारा उपभोक्ता तक माल की विशेषताओं को विज्ञापीत करती है जिन्हे◌देख या सुनकर छोटे से छोटा बच्चा या बडे◌से बडा बुढ्डा भी उसी ब्रांड की माँग करता है। यह विज्ञापन जनसंचार के◌विविध माध्यमों से होता है, जिसमें सबसे प्रमुख होती है घ्भाषाङ।

विज्ञापनों की होड में भाषा एक प्रमुख साधन है। फिल्म एवं दूरदर्शन विज्ञापनों की विश्वसनीयता और प्रभाव के◌लिए भाषा और चित्रो का आधार लेते हैं। श्रव्य् माध्यम अर्थात रेडियो में केवल ध्वनि विशेष का उपयोग कर भाषा में माधुर्य उत्पन्न कर प्रभावी विज्ञापन बनाया जाता है। विज्ञापन का संबंध हर वर्ग से होता है। सृजनात्मकता के◌रुप में आकर्षक शब्द योजना के◌साथ नई संज्ञाएँ, नयी वर्तनी आदि के◌प्रयोग करते हुए भावों को प्रेषित या लिखित रुप में पेश किया जाता है। अतः भाषा यहाँ संप्रेषण का माध्यम है, ज्ञान का नहीं। आँचल विशेष से जुडे◌विज्ञापन में ग्राहकों को आकृष्ट करनेवाली भाषा या बोली का प्रयोग करने से विज्ञापन सहज और कामयाव सिध्द हो जाता है। जयप्रकाश मिश्र के◌शब्दों में ङभाषा भावों की संवाहिका होती है। भावाभिव्यक्ती सार्थक और प्रभावोत्पादक हो इसके लिए आवश्यक है कि भाषा में ध्वन्यात्मकता का प्राचुर्य हो ही, उसमें तात्त्विकता की भी गहनता हो। कर्णप्रिय होना ही पर्याप्त नहीं, भाषा को विचारोत्तेजना के◌सृजन में भी

सक्षम होना चाहिए। इन गुणोंका समावेश भाषा में तभी संभव हो सकता है जब प्रयुक्त शब्दों का तथा शब्दोंके◌विन्यस्त वाक्योंका चयन योग्यता पुर्वक किया जाए। घ्ड(प्रयोजनमूलक हिंदीङ- ओंकारनाथ वर्मा पृ. VII)

विज्ञापन कर्ता निश्चित रुप से उपरोक्त बातों का ध्यान रखते हुए ही विज्ञापन की भाषा का प्रयोग करता है। विज्ञापन चाहे◌किसी भी वस्तु का हों, उसकी भाषा सर्वश्रुत होनी चाहिए इस दृष्टीसें भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी भाषा ने अपना लोहा मनवाया हैं। चुँकि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा के◌साथ ही एक संपन्न संपर्क या माध्यम भाषा का पद ग्रहण कर चुकी है।ङङ अब जीवन और जीवीकोपार्जन से जुडे सभी कार्य - व्यापारों के◌माध्यम के◌रुप में हिंदी का प्रयोग होने लगा है, यही उसकी प्रयोजनपरकता है; इसलिए उद्योग व्यापार, संचार फीचर लेखन और विज्ञापन के◌लिए हिंदी का प्रयोग होने लगा है। घ्ड(प्रयोजनमूलक हिंदी - पृष्ठ XI ओंकारनाथ वर्मा)

आज के◌इस विज्ञापन या बाजारवाद पर हिंदी के महान साहित्यकार प्रेमचंदजी की यह पंक्तियाँ कितनी सुंदरता से लागू होती है - घ्डबिल्ली बख्शे, मुर्गा लंडूरा ही रहेंगा। जिनके पास न खाने को अन्न है और न पहनने को वस्त्र, वह ब्रॉडकास्टिंग सुनकर अपना मनोरंजन न करेंगे तो कौन करेगा? व्यापार चलाने की कितनी बढ़िया नीति है। यह व्यापारी मानवी प्रकृति की दुर्बलताओं को खूब समझते हैं और खूब अपना मतलब गाँठते है। कल्लोंच से कल्लोंच आदमी में भी अमोद-विनोद की प्रवृत्ती होती है। यह व्यवसायी उसी स्थल पर अपना निशाना लगाता है और शिकार मार लेता है।ङङ कहना ना होगा कि अब उपभोक्तावादी भौतिक सभ्यता में अभ्यस्त हो जाने के बाद अर्थोपार्जन के◌ऐसे सारे◌कार्य वरेण्य बन गये हैं। (घ्डप्रयोजनमूलक हिंदीङङ प्रो. सुर्यप्रकाश दीक्षित और डॉ. योगेंद्र प्रतापसिंह पृ. ९)

आज हर वस्तु एक जिन्स है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में अपने माल को बेचने की होड लगी है। वह व्यवसायिक नीति के कारण यहाँ की संपर्क भाषा तथा क्षेत्रीय भाषा को अपनाकर अपना माल बेचने में लगी है। १९ वी शती में इसाई मिशनरियों ने खडी बोली का प्रयोग कर अपनी कम्पनियाँ खडी की थी , आज भी वही परिस्थितियाँ दिखाई दे रही है ।

जब हम अपना माल या वस्तु बेचना चाहते है तब हमे उसकी जानकारी हेतू घ्भाषाङ का प्रयोग करना होता है। घ्विज्ञापनङ शब्द व्युत्पत्तिमूलक अर्थ भी है विशेष रूप से जानकारी देना। जानकारी देने की प्रक्रिया उपभोक्त को उत्पादक द्वारा ही दी जाती है अतः यहाँ सरल, सुंदर आकर्षक शब्दो का प्रयोग होता है क्योंकि यह विज्ञापन, किसी एक व्यक्ती के लिये नहीं होता उसका आशय तो आम आदमी तक पहुँचाने की कोशिश होती है। कोई ऐसी वस्तु जिसकी हमें जरूरत नहीं होती है, विज्ञापन की आकर्षक भाषा के कारण वह खरीद ली जाती है। अतः विज्ञापन में आकर्षण पैदा करने के◌लिए घ्भाषाङ के स्वर /अतिशयोक्ति पूर्ण लेखन आदि के द्वारा किसी वस्तु या चीजों की और आकर्षित किया जाता है। यह सब भाषा का ही कमाल है, इसीलिए तो कहा जाता है - घ्डलोगों का दिल गर जितना हो तो, बस मीठा-मीठा बोलो।ङङ विज्ञापन की भाषा चाहे वह हिंदी हो या अन्य क्षेत्रीय भाषा हो, उसमें मिठास के◌साथ भावात्मकता, मनोवैज्ञानिकता, अलंकारीकता व अभिधेयार्थता व्यक्त करने की शक्ति होनी चाहीए। पाठक, दर्शक, श्रोता यह सभी मनुष्य है और मनुष्य की एक भाषा है। विज्ञापन आलेख - लेखक को चाहिए कि वह अपने आलेख से उस मनुष्य को वस्तु खरीदने के लिए प्रेरित करें। उसे मनुष्य के मनोविज्ञान तथा भावना का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। उसे अपना◌आलेख ऐसा लिखना चाहिए कि श्रोता, पाठक या दर्शक उससे प्रभावित हो जाए।

सहज सुंदर भाषा के◌लिए अभिधा शब्दशक्ती द्वारा हि आकर्षित करना योग्य होता है - जैसे - घडी डिटर्जंट

टिकियाँ - घ्डपहले ईस्तेमाल करे फिर विश्वास करे।

इसी प्रकार रिलायन्स फोन के◌विज्ञापन में -ङङकरलो दुनिया मुठ्ठी मेंङ

झण्डू बाम के संदर्भ में - ङएक बाम, तीन काम।

व्हिक्स गोली - घ्ङव्हिक्स की गोली लो खिंच खिंच दूर करो।

ऐसे कई विज्ञापन अपनी सहज - सुंदर, आकर्षक और अर्थपूर्ण भाषा के कारण वस्तु विक्रय में मददगार साबित होतें है। नमुनें के तौर पर जैसे घ्ङडी. कोल्ड टोटलङङ के संदर्भ में - घ्डी कोल्ड घ्अपनाए और घ्दर्दङ भगाए।ङङ

अब हम हिंदी भाषा के और कुछ विज्ञापन आलेख देखेंगे, इन से स्पष्ट हो जाएगा कि हिंदी भाषा में प्रसारीत विज्ञापनों द्वारा माल की बिक्री कैसे बढ जाती है। हिंदी भाषा का विकसित रूप देखते हुए आज हिंदी भाषा अपना एक अलग वाणिज्यिक रुप ग्रहण कर रही है। भाषा भावों की प्रवाहिका होती है - जहाँ भावनाएँ उत्पन्न होती है वहाँ आकर्षण पैदा होता है और आकर्षण हर किसी को आकृष्ट करता है, यह आकृष्ट करने वाली चीज मनुष्य - मन को बेचैन कर देती है। विज्ञापन कला में यही सबकुछ होता है। अब ऐसे कुछ उदाहरण देखे जा सकते है जिसमें आलंबन रुप मे विज्ञापन की भाषा के भाव देखे जा सकते है।

कैटबरी चॉकलेट - ङकुछ मीठा हो जाए।

कोका कोला - ठंडा मतलब कोका कोला

पेट सफा चुर्ण - ङपेट सफा, हर रोग दफा।

लाईफबॉय साबुन - घ्ङतंदुरुस्ती की रक्षा करता है लाईफबॉय, लाईफबॉय है जहाँ, तंदुरुस्ती है वहाँ।

लक्स या लीरील साबुन के संदर्भ में - टब या समंदर में नहाती सुंदर युवती व्दारा -ङङमेरे सौंदर्य का राज लक्स।ङङ घ्ङमन में ताज़गी जगाए - घ्लीरीलङङ जैसे आकर्षण पैदा करने वाले चित्र या श्लोगन व्दारा घविज्ञापन कर्ताङ ग्राहक को आकर्षित करता है। यहाँ हमें भाषा का एक नया रुप देखने मिलता है, जिसमे हिंदी भाषा अपना एक अलग रुप या अस्तित्व ग्रहण करती नजर आती है। स्पष्ट है कि साधारण रुढार्थ - प्रधान शब्दोंका विशिष्ट प्रयोग विज्ञापन की महत्वपुर्ण विषेशता मानी जाती है। शब्दोंका ऐसा प्रयोग समाचार पत्र, टि.व्ही., रेडियो जैसे माध्यमों के विज्ञापनो में किया जाता है।

वस्तु - विक्रय के विज्ञापनों में भाषा का यह रुप एवं प्रयोग सभी स्तरोंपर मिलता है। भाषा के शब्द सरल, सहज, बोधगम्य और व्यावहारीक अवश्य होते हैं। वहाँ हिंदी, अंग्रेजी, उर्दु, फारसी एवं शब्दो का कोई परहेज नहीं होता। जहाँ हम देखते है कि विज्ञापन में शब्दों की संख्या कम-से-कम रहती है। चाहे वे अरबी - फारसी या अंग्रेजी के हों या मराठी, हिंदी के, उन्हें समझने में कोई कठिनाई नहीं होती और हिंदी भाषा के विकास में नये - नये शब्द बनते जाते है। माध्यम और विज्ञापन के विषय के आधार पर भाषा के भिन्न - भिन्न रुप प्राप्त होते हैं। सरकारी विज्ञापनों में राजभाषा की शब्दावली, लंबे वाक्य मिलेंगे तो वर्गीकृत विज्ञापनों में कम-से-कम शब्द और अधूरे वाक्य। रेडियो के विज्ञापन वाणी आधारित होंगे तो टी.व्ही. के विज्ञापन चित्र या दृष्य शब्द के रुप में। यह विविधता अब कला और विज्ञान दोनों स्तरों पर विकासमार्गी है। डॉ.लक्ष्मीकांत पाण्डेय के शब्दों में - हिंदी भाषा का इस विज्ञापन क्षेत्र में नाए सिरे से, साहित्यिक पंक्तियों के साथ प्रयोग होना शुरु हो गया है, जिसने विज्ञापनों में हिंदी भाषा की असीम संभावनाओं के द्वार उन्मुक्त कर दिए है।

साभार - संदर्भ ग्रंथ सूची -

१) प्रयोजनमूलक हिंदी - ओंकारनाथ वर्मा।

२) प्रयोजनमूलक हिंदी - प्रो.सुर्यप्रकाश दीक्षित और डॉ.योगेंद्र प्रतापसिंह।

३) प्रेमचंद विविध प्रसंग - २ - प्रेमचंद।

४) हिंदी के प्रयोजनमूलक भाषा रुप - डॉ.माधव सोनटक्के।

५) प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ.लक्ष्मीकांत पाण्डेय डॉ.प्रमिला अवस्थी।

६) बाजारवाद और जनतन्त्र - प्रफुल्ल कोलख्यान।

७) प्रयोजनमूलक हिंदी (किताब पहली) यशवंतराव चव्हाण म.मुक्त विद्यापीठ, नाशिक।

Principal
Adv. B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed

आ. तालुका शिक्षण प्रसारक मंडल, संचालित

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी जि. बीड

Accredited by NAAC B++ Grade with 2.78 CGPA, ISO 9001 : 2015 Certified, Green Audited College

तथा

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

" हिंदी साहित्य और सिनेमा "

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि, ... प्रा. जयनुल्लाखान मोहंमद हयातखान पठाण ......

...... कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी जि. बीड ...... ने दिनांक ०२ फरवरी २०२१

को आयोजित "हिंदी साहित्य और सिनेमा", राष्ट्रीय संगोष्ठी में ...... " सिनेमा और पटकथा लेखन " ......

इस विषय पर शोध निबंध लेखक/वाचक/संयोजक/कार्यकारी संपादक (रिसर्च जर्नी) तथा सत्र अध्यक्ष के रुप में सक्रिय सहभाग लिया।

एतदर्थ यह प्रमाणपत्र दिया जाता है।

प्रा. जयनुल्लाखान पठाण	Arts, Commerce & Science College, Ashti Tal.Ashti Dist.Beed	डॉ. सोपान निंबोरे
हिंदी विभागाध्यक्ष तथा संयोजक		प्रधानाचार्य तथा निमंत्रक

2018-19

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2019 Special Issue- 105 (A)

हिंदी साहित्य और सिनेमा

अतिथि संपादक :
डॉ. एस.आर. निंबोरे
प्राचार्य,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
आष्टी, तह. आष्टी, जि. बीड

विशेषांक संपादक :
प्रा. जे.एम. पठाण
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
आष्टी, तह. आष्टी, जि. बीड

सहयोगी संपादक :
प्रा. एस.एम. खुडे
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी
प्रा. ए.बी. टाळके
भगवान महाविद्यालय, आष्टी
प्रा. व्ही.बी. गव्हाणे
गांधी महाविद्यालय, कडा
डॉ. जी.बी. मंडलिक
ए.डी. महाविद्यालय, कडा
प्रा. एस.पी. पवार
भगवान महाविद्यालय, आष्टी

मुख्य संपादक :
डॉ. धनराज धनगर

PRINCIPAL
Arts,Commerce & Science
College,Ashti Tal.Ashti Dist.Beed

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

RESEARCH JOURNEY

SWATIDHAN PUBLICATIONS

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
1	सिनेमा और पटकथा लेखन	प्रा. जयतुल्लाखान पठाण	05
2	हिंदी साहित्य ,समाज ओर सिनेमा	डॉ . दत्ता साकोळे	09
3	सिनेमा ओर हिंदी साहित्य	डॉ .चित्रा धामणे	14
4	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा	डॉ. सूर्यकांत दळवे	18
5	इक्कीसवी सादी का सिनेमा	प्रा. एस .टी. मुजावर	21
6	हिंदी कथा साहित्य और सिनेमा	आर. के. देशपांडे	24
7	हिंदी साहित्य और सिनेमा	डॉ. विष्णू गव्हाणे	27
8	अपने देश में आपना सिनेमा : शुरुवाती दौर	डॉ. गुलाबराव मंडलिक	30
9	सिनेमा ओर पटकथा लेखन	डॉ. ए. बी . टाळके	34
10	सिनेमा, अभिनय ओर नारी	प्रा. शुभांगी खुंडे	37
11	साहित्य, सिनेमा ओर समाज अंत:संवध	प्रा. पोपट जाधव	40
12	हिंदी सिनेमा ओर पटकथा लेखन	प्रा. अच्युत शिंदे	43
13	प्रेमचंद का साहित्य ओर सिनेमा	डॉ. संगीता आहेर	46
14	साहित्य ओर सिनेमा का संवंध	प्रा. एस. पी पवार	49
15	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा	प्रा. जी. बी. जाधव	52
16	सिनेमा साहित्य ओर हिंदी	प्रा. कल्याणी जगताप	54
17	सिनेमा, समाज ओर हिंदी भाषा	डॉ. एस.सी. कारंडे	57
18	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा का संवंध	डॉ. अमर वाघमोडे	59
19	हिंदी-मराठी साहित्य और सिनेमा	सीमा पाटील, डॉ.बी.आर.नळे	62
20	हिंदी भाषा ओर सिनेमा का संवंध	माई दोडके	66
21	सिनेमा, साहित्य और हिंदी	प्रा. प्रकाश लहाने	70
22	सिनेमा, साहित्य और हिंदी	डॉ. सुभाष जिते	72

*इस अंक के सभी अधिकार प्रकाशकने आरक्षित किये है। प्रकाशित आलेख पुन:प्रकाशित करने से पहले प्रकाशक एवं लेखक की संयुक्त लिखित अनुमती जरुरी है । प्रकाशित आलेखो में व्यक्त मंतव्य केवल लेखक के है, इन मंतव्य से संपादक और प्रकाशक सहमत हो, यह जरुरी नहीं है । आलेख के संदर्भ में उपस्थित कॉपीराईट **(Originality of the papers)** की जिम्मेवारी स्वयं लेखक की है ।***

- संपादक

PRINCIPAL
Arts,Commerce & Science
College,Ashti Tal.Ashti Dist.Beed

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 105 (A)- हिंदी साहित्य और सिनेमा
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

सिनेमा और पटकथा लेखन

प्रा. पठाण जयनुल्लाखान
(हिंदी विभागाध्यक्ष)
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान
महाविद्यालय आष्टी जि. बीड
jainullapathan@gmail.com
Mob - ९४२३४७१५६०

भारतीय सिनेमा और साहित्य का अटुट नाता है। गोरतलब है कि सिनेमा भी तो साहित्य ही है। साहित्य की व्याख्या पर नजर डाली जाए तो साहित्य, समाज के हित से जूडा होता है वह समाज की रुढी-परंपराओं, सुख-दु:ख, हास-परिहास, तीज-त्योहार, दोस्ती-दुश्मनी, जन्म-मत्यु, विश्वास-अंधविश्वास आदि विषयों को अपनी कथा का विषय बनाते हुए तत्कालीन समाज के दर्शन कराने हेतू एक जुलाहे की भाँती कथा को बुनता है, जिसे अनेक रंगो में रंगवाकर एक नई चीज (कहानी, उपन्यास, नाटक, पटकथा) आदि का निर्माण करता है। यहाँ 'जुलाहा' अर्थात - कथा लेखक, निर्माता, दिग्दर्शक या पटकथाकार है। 'अनेक रंग' उसके पात्र तथा पात्रों के क्रिया-कलाप और दृश्य है तो 'नई चीज' अर्थात कथा या पटकथा है।

साहित्यिक दृष्टि से कोई एक प्रसंग-घटना ही कथानक का आधार होती है, इसी धागे को पकडकर पटकथा का विकास होता है। इसमे पात्र, संवाद, देशकाल वातावरण इन तत्वों को आधार बनाते हुए और किसी एक भाषा के माध्यम से उद्देश की पुर्ति करने हेतु कथा आगे बढती है और चरमोत्कर्ष पर पहुँचकर समाप्त होती है। कभी-कभी यह कथा अधुरी ही छोड दी जाती है, जिससे पाठक, श्रोता या दर्शक कुछ अनुमान लगा सके। आजके सिनेमा की पटकथाओं में यह बात दढल्ले से देखी जा रही है क्योंकि हर सिनेमा के दूसरे भाग की संभावनाएँ बनी रहे।

साहित्यिक कलाओं मे, साहित्य की तुलना सिनेमा सामाजिक यथार्थ को प्रतिबिंबित करने का एक सशक्त माध्यम है। इसका एक विशाल दर्शक वर्ग है, जो फिल्मी कथाओं में विशिष्ट अभिरुची की खोज करना चाहता है। यही वजह है कि कथा - पटकथा लेखक को इन सभी का ध्यान रखना होता है।

डॉ. सुभाष दुरुगकर के शब्दों में "यह दर्शक निम्न से निम्न स्तर से लेकर उच्च और संभ्रान्तवर्ग तक तथा छोटे देहात से लेकर विशालकाय महानगरों तक फैला हुआ है। यह विशाल दर्शक वर्ग अलग - अलग अभिरूचि वाला, सिनेमा से अलग - अलग प्रकार की उम्मीदें रखनेवाला तथा जीवन की विभिन्न बातों को अपनी - अपनी दृष्टि से प्राथमिकता देनेवाला है।" (पृष्ठ १३७) जाहिर है कि पटकथाकार को इन्हीं लोंगो की अभिरुची नुसार साधारणीकरण करने हेतु पटकथा में अलग - अलग दृश्यों (देह प्रदर्शन, मार-धाड, हास्य-विनोद आदि) के हथखंडे अपनाने पडते है। इन्हे देख या सुनकर लोंगो को लगे कि यह नायक या नायिका नही बल्कि मैं ही हुँ। अतः पटकथाकार की कथा साहित्य के छःतत्व कथानक, पात्र, संवाद, देशकाल वातावरण, भाषा शैली और उद्देश्य के साथ ध्वनी, दृश्य, प्रतिक-विधान, पार्श्वसंगीत, नेपथ्य आदि का ध्यान रखते हुए पटकथा का ताना-बाना बूना जाता है। इसीलिए साहित्यिक कथाओं, उपन्यासो और नाटको पर बननेवाली फिल्मे यहाँ बिल्कुल अलग रूप धारण कर हमारे सामने आती है।

कथा-से-पटकथा -

कथा का अर्थ है जीवन की वह घटना या प्रसंग जिसे लेखक ने जिया है, देखा है या कल्पना की है, उसे वह अपनी प्रतिभा के सहारे वाक्यों में बांधकर एक कहानी के रुप में व्यक्त करता है। सिनेमा की पटकथा लिखने से पहले निर्देशक या निर्माता पटकथाकार को एक लाईन की कथा दे देता है। इसी को आधार बनाते हुए पटकथा आगे बढती है। जिसमे पात्र, संवाद, दृश्य, गीत-संगीत, स्थान-काल, हाव-भाव, रुप-रंग, साज-सज्जा आदि का सहारा लेते हुए अनेक दृश्यो में पटकथा आगे-आगे बढती हे और चरमोत्कर्ष पर पहुँचकर समाप्त होती है।

'लगान' फिल्म के बारे में एक किस्सा है कि अशुतोष गोवारीकर के पास एक कथा थी ३ "अंग्रेजो का राज था, राज्य में अकाल पडा था, कृषक वर्ग परेशान था - इसलिए लगान चुकाने में असमर्थ, ऐसी स्थिति में गांव का एक नौजवान अंग्रेजो से बिनती करता है - अंग्रेज क्रिकेट मैच खेलकर अगर किसान जीत जाए तो लगान माफ करने का फैसला लेते है।" इस कथा पर अमिरखान के साथ सिनेमा बनाना चाहते थे, इस बकवास कल्पना पर अमिरखान ने इन्कार कर दिया। कुछ सालो बाद इसी कथा की पटकथा लेकर जब गोवारीकर अमिर से मिले तो उन्होंने हाँ कर दी। स्पष्ट है कि कथा चाहे जो हो पटकथाकार उसे किस रूप में ढालता है, उसी पर सिनेमा की सफलता अवलंबित होती है।

२००४ में 'ज्युली' फिल्म से डेब्यु करनेवाली नायिका नेहा धुपिया ने कहा था "बॉक्स ऑफिस पर सेक्स और शाहरुख बिकते है। वही २०१३ में अपनी पुरानी बात में सुधार करते हुए कहा था कि सेक्स और शाहरुख के साथ अब स्क्रिप्ट भी बिकती है।" (आऊट लुक - जनवरी १८ पृ. ५९) यही कारण है कि जहाँ अच्छे-अच्छे साहित्यकार (जैसे प्रेमचंद, रेणु, राजेंद्र यादव) की लोकप्रिय कृतियों पर बनी फिल्मे सशक्त पटकथा लेखन के अभाव से असफल रही, तो सस्ते साहित्यकारो की सशक्त पटकथा पर बनी फिल्में सफल रही। गुलशन नंदा के उपन्यासों पर लिखी पटकथाओं पर बनी फिल्मे इसका सशक्त प्रमाण है। जैसे राजकुमार अभिनीत 'काजल' (१९६५) 'निल कमल' (१९६८) राजेश खन्ना की 'कटी पतंग' (१९७०) संजीवकुमार की 'खिलौना' (१९७०) शशी कपुर की 'शर्मिली' (१९७१) राजेश खन्ना की 'दाग' (१९७३) इसी तरह सलीम-जावेद की पटकथाओं पर बनी 'दिवार', 'शोले', 'त्रिशुल', कादर खान की 'मुकद्दर का सिकंदर', 'लावारीस'। कहा जा सकता है कि साहित्यिक कथा लेखन एक और बात है जबकि फिल्मी कथा - पटकथा लेखन एक और बात है, चाहे तत्वों को लेकर उनमें समानता हो।

पात्र तथा संवाद :-

सिनेमा एक दृक - श्रव्य माध्यम है इसलिए इसमे मुख्य पात्रो के अलावा अन्य अनगिनत पात्र होते हैं। इनमे से बहुतेरे पात्र केवल दृश्यो को प्रभावी बनाने के लिए होते हैं। पटकथाकार को अपनी पटकथा के दृश्यों में इनका उल्लेख करना होता है ताकि फिल्मांकन में दिग्दर्शक को सुविधा हो जाए। नाटक में भी यह होता है परंतु फिल्मो के दृश्य कभी इस देश तो कभी उस देश या समंदर या जंगल आदि से जुडे होते हैं। पटकथाकार हजारों दृश्यो में पटकथा का विकास करता है। कहाँ क्या करना है, क्या नहीं करना है, किन-किन चींजो की आवश्यकता होगी, वातावरण, पार्श्वसंगीत, वस्तुए, पात्रो की संख्या, हाव भाव, समय, स्थान, गीत-नृत्य आदि बातो का उल्लेख करते हुए दृश्यों का लेखन होता है। किस अभिनेता के लिए पटकथा लिखनी है इस बात पर भी पुर्ण ध्यान दिया जाता है। पात्रानुरूप संवाद लेखन सिनेमा के लिए आवश्यक होता है।

ISSN :
2348-7143
February-2019

सिनेमा में संवादों का विशेष महत्व है, जो उच्च, निम्न तथा सर्वहारा वर्ग को भी आकर्षित कर सके। संवादों से भी सिनेमा हिट होता है। फिल्म 'मदर इंडिया' के बारे में जावेद अख्तर बहुत ही अच्छे विचार व्यक्त करते है - राधा का बेटा बिरजु (सुनिल दत्त) कहीं से बंदूक चुरा लाता है और घर आकर पुआल में छिपा देता है। माँ उससे प्रश्न करती है। बेटा कहता है, वह सुखीलाला (कन्हैय्यालाल) को बंदूक से मार डालेगा, उसके मरते ही सब परेशानियाँ खत्म हो जाएगी। "माँ कहती है बंदूक समाज की किसी परेशानी का हल नहीं है। वह कहती है तुम बंदूक से खेत नहीं जोत सकते, बंदूक से रोटी नहीं बनाई जा सकती, बंदूक उपाय नही है।" इस फिल्म में ऐसे कई क्षण व संवाद थे जो आज भी संवाद लेखक (वजाहत मिर्झा) की याद दिलाते है। (आऊटलूक - पत्रिका-नवंबर १७ पृष्ठ ५३)। सिनेमा के संवाद छोटे - छोटे, मर्मभेदी, सहज और उद्देश्यपूर्ण हो तो सहज रूप में पटकथा आगे बढती है। यही कारण है कि सलीम-जावेद, कादर खान, डॉ. राही मासुम रजा, कमलेश्वर आदि पटकथाकार एवं संवाद लेखकों के संवाद काफी चर्चित रहे हैं। जैसे- "डॉन का इंतजार ग्यारह मुल्कों की पुलिस कर रही है, पर डॉन को पकडना मुमकिन ही नही नामुमकिन है।" "जिनके घर शिशे के होतें हैं, वे दूसरो के घरों पर पत्थर नहीं फेका करते, चिनॉस सेठ (वक्त)।" कितने आदमी थे तथा गांव से पचास-पचास कोस दूर जब बच्चा रोता है तो माँ कहती है साजा बेटा, नहीं तो गब्बर आ जाएगा (शोले)। "शराबी को शराबी नही कहेगे तो क्या जुआरी कहेगे।" (शराबी)

पटकथाकार ही जब संवाद लिखता है तब उसमें प्रभावोत्पादकता आती है। पटकथाकार को छोड कभी-कभी अन्य संवाद लेखकों को भी संवाद लेखन कार्य सौंपा जाता हैं जिसमें उन्हें महारत हासिल है। कादर खान और डॉ. रजा इन्ही मे से थे।

देशकाल और वातावरण :

पटकथा लेखन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। सिनेमा की कथा में निहित घटना - प्रसंगो के चित्रण के लिए स्थान और कालगत परिवेश की जरुरत होती है, इनका स्पष्ट संकेत या वर्णन उन दृश्यों में करना होता है जिससे फिल्मांकन में आसानी हो और वे प्रभावी बन सके। आधुनिक युग में पटकथाकार को स्पॉट दृश्य, स्पॉट लाईट, वस्त्र, रूपविज्ञास, वस्त्रविज्ञास, संगीत, ध्वनी प्रभाव व प्रतिबिंब आदि के माध्यम से वातावरण का निर्देश करना होता है क्योंकि फिल्म का वातावरण या परिवेश भी कथा का एक हिस्सा होता है - जो दर्शकों को कुछ-ना-कुछ कहता है। पटकथाकार के रंगसंकेतों के आधार पर ही निर्देशक और नेपथ्यकार सेट्स, शिल्प, नद-नाले, पहाड-वन आदि के कलात्मक उपयोग से पर्दे पर प्रभावोत्पादकता लाने का प्रयास करता है। जैसे राजा की कथा के लिए दरबार का आभास देनेवाले सेट्स, परदे, सिंहासन-आसन, कालीन आदि के माध्यम से प्रेक्षक में वांछित प्रभाव जगाने में सफलता हासिल हो सके। पटकथाकार प्रकाश योजना व्दारा देशकाल एवं स्थिती का परिवेश उभारता है, इससे दूरी का आभास देना, संवेगात्मक भाव की गहराई का प्रभाव निर्माण करना, पात्रों की भावदशा को व्यंजित करना आदि कार्य संपन्न होते है। वेशविन्यास और रुपविज्ञास के माध्यम से चरित्र के न केवल बाह्य व्यक्तित्व से परिचय होता है बल्कि उसकी उम्र, मानसिकता, आर्थिक - शैक्षिक स्तर का परिवेशगत प्रभाव के बिंब उभार सकता है। फिल्म में भले ही यह कार्य निर्देशक व्दारा किए जाते हो लेकिन पटकथाकार अपने लेखन में इसके स्पष्ट संकेत देता है। जैसे परिवेशगत पृष्ठभूमि में मेघों का गर्जन, पशु - पक्षियों की आवाजें, घोषणाऍं, नारे जैसे ध्वनि प्रयोगों का संकेत भी करना होता है। संगीत की ध्वनियों में कौनसी ध्वनि ली जाए जिससे पात्रों के मन

की दशा व्यक्त हो इनका उल्लेख भी पटकथाकार को करना होता है। ईसका निर्देश पटकथाकार को दृश्यों में देना होता है। किसी पटकथा को सफल बनाने में भाषा प्रस्तुती और अभिनय का महत्वपुर्ण योगदान होता है। यह प्रस्तुतिकरण आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक इन चार रुपों में होता है। दुःखद प्रसंग में हास्य - विनोद गलत बात होगी, जबकि आनंद प्राप्ति के बाद आँख से आँसू आए तो आपत्ती नहीं हो सकती। इसलिए पटकथाकार को भाषा - संवाद रचना तथा कुल दृश्यात्मक परिकल्पना में अभिनय तत्व को ध्यान में रखना पडता है।

उद्देश्य या प्रयोजन :

सिनेमा का मुख्य उद्देश्य है मनोरंजन तथा अर्थप्राप्ति। पटकथाकार को जनरुचि कैसी है तथा अर्थप्राप्ती कैसे हो? इन बातो का ध्यान रखते हुए पटकथा लिखनी होती है। सिनेमा देखकर प्रेक्षक जिस आनंद का अनुभव करता है, उसे 'रस' कहा जाता है। थिएटर में बैठा दर्शक जब काल्पनिक स्तर पर शोक, रति, हास-परिहास आदि संवेगों का अनुभव करता है तब उसे एक प्रकार के कलात्मक आनंद की प्राप्ति होती है। फिल्म देखते वक्त फिल्म के पात्रों, अभिनेताओं तथा प्रेक्षकों की सारी वैयक्तिक विशिष्टताएँ तिरोहित होकर उनमें एकसुत्रता तथा भावों की ऐसी निर्वेयक्तिकता निर्माण होकर वे सब एक साथ कथा में व्यक्त मनोभावों से प्रभावित हो, आनंद प्राप्त कर सके, ऐसी पटकथा लिखी जानी चाहिए।

निष्कर्ष रुप में कहें तो सिनेमा समाज का पथदर्शक होने के साथ मनोरंजन तथा अर्थप्राप्ति का साधन है। इसकी कथा में जीवन का व्यापक चित्रण किया जाता है। सामूहिकता, संवादात्मकता, दृश्यात्मकता, ध्वनी-प्रभाव, देश-विदेश चित्रण, सांस्कृतिक चेतना, रंगभूषा, वेशभूषा, लयात्मकता, संगीतात्मकता आदि के कारण सिनेमा एक प्रभावशाली विधा है, जिसका सम्बन्ध उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक होता है। सिनेमा का दर्शक ही पटकथा लेखन और परंपरा को प्रभावित करता है। सिनेमा की पटकथा में रोचकता, नाटकीयता, मनोरंजन, कार्यव्यापारों का कलात्मक नियोजन आवश्यक होता है। चरित्र-चित्रण में जीवंतता लाना पटकथाकार के ही हाथ, होता है। प्रकाश, ध्वनि, दृश्यसज्जा, गीत संगीत, नेपथ्य आदि साधनों का प्रयोग कर पटकथा में अपेक्षित प्रभाव निर्मित किया जाता है। अभिनय और भाषा फिल्म का प्राणतत्व है। पटकथाकार की कल्पना को अभिनेताओं व्दारा ही प्रेक्षक तक पहुँचाया जाता है। सशक्त पटकथा ही सिनेमा को सफल बनाकर अर्थप्राप्ति तथा लोगों का मनोरंजन कराती है और स्टार को सुपरस्टार बनाती है।

साभार सहायक संदर्भ ग्रंथ :

१. राही मासूम रजा का कथा साहित्य : डॉ. सुभाष दुरूगकर, दिव्य डिस्ट्रीब्युटर कानपुर.
२. हिंदी : कथनपरक साहित्य HIN-२१२ : य.च.म.मु. विद्यापीठ, नाशिक
३. राही मासूम रजा एक अध्ययन : डॉ. जिलेदार सिंह, चिन्तन प्रकाशन, कानपूर.
४. आऊटलुक समाचार पत्रिका, जनवरी, जुलाई और नवंबर २०१८
५. लोक (संचार) माध्यम : प्रसतुति के रचनात्मक आयाम : डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी
६. फिल्मी फंडे - अमिर खान का इंटरव्यु Google.com

PRINCIPAL
Arts,Commerce & Science
College,Ashti Tal.Ashti Dist.Beed

18-19

प्रमाणपत्र

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद संलग्नित,

अजंठा एज्युकेशन अ‍ॅन्ड मिलीटरी प्रिपरेटरी इन्स्टीट्यूट, औरंगाबाद संचलित

इंद्रराज कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सिल्लोड. जि.औरंगाबाद

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी तिथी २५ फरवरी २०१९

विषय :- आधुनिक हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृती

प्रमाणित किया जाता है कि, कु./श्री/श्रीमती/प्रा./डॉ. जयनुल्लाखान पठाण

महाविद्यालय, कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी जि. बीड.

ने 'आधुनिक हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृती' विषय पर आयोजित एक-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी मे विशेष वक्तव्य/ सत्राध्यक्ष/ शोध आलेख प्रस्तोता/ प्रतिभागी/ शोधार्थी के रूप में उपस्थित होकर सक्रिय सहयोग दिया। एतदर्थ यह प्रमाणपत्र सम्मान सहित प्रदान किया जाता है।

शोध आलेख का विषय :- आधुनिक हिंदी साहित्य में दलित विमर्श (प्रेमचंद के संदर्भ में)

PRINCIPAL
Arts,Commerce & Science College,Ashti Tal.Ashti Dist.Beed

डॉ. प्रमोद पाटील	डॉ. मनिषा मुगळीकर	डॉ. प्रमोद शर्मा
(संयोजक)	(सहसंयोजक)	(प्रधानाचार्य)

Impact Factor – 6.261 | Special Issue - 145 | Feb. 2019 | ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

RECENT TRENDS IN

ENGLISH, MARATHI, HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

- GUEST EDITOR -
Principal Dr. P. P. Sharma

- CHIEF EDITOR -
Dr. Dhanraj T. Dhangar

- EXECUTIVE EDITORS -
Dr. S. S. Chouthaiwale
Dr. A. T. More | Dr. P. S. Patil

Printed By : **PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON**

For Details Visit To : www.researchjourney.net

PRINCIPAL
Arts,Commerce & Science
College,Ashti Tal Ashti Dist.Beed

हिंदी

८४. आधुनिक हिन्दी कविता में किसान की वेदना २३२
डॉ. अमित कुमार सिंह कुशवाहा
८५. मैत्रयी पुष्पा के उपन्यास में स्त्री–विमर्श अगनपाखी उपन्यास के संदर्भ में २३९
प्रा.डॉ.सांगोळे शिवाजी
८६. मैत्रयी पुष्पा के उपन्यास में स्त्री विमर्श 'विजन' उपन्यास के संदर्भ में २४१
डॉ. अश्विनीकुमार चिचोंलीकर
८७. हिंदी विभाजन के उपन्यासों का अंग्रेजी में अनुवाद २४३
प्रा. पी. बी. सावंत
८८. जीरो रोड़ की वैश्विकता और वैश्विकरण २४५
डॉ. शेख अफरोज फातेमा
८९. आधे–अधुरे जीवन की कहानी – अस्तित्व और पहचान २४७
प्रा. डॉ. कुसुम राणा
९०. हिंदी साहित्यकार प्रेमचंद का हिंदी सिनेमा में योगदान २४९
डॉ. दिग्विजय टेंगसे
९१. आधुनिक हिन्दी साहित्य में विविध विमर्श आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी की बदलती भूमिका २५१
डॉ.राजश्री भामरे
९२. आधुनिक हिंदी साहित्य में दलित विमर्श (प्रेमचंद के संदर्भ में) २५३
प्रा. पठाण जयनुल्लाखान
९३. आधुनिक हिंदी साहित्य में विविध विमर्श २५६
डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह
९४. २१ वी सदी के हिंदी साहित्य में मानवतावाद २५९
डॉ. विनोद श्रीराम जाधव
९५. समकालीन हिंदी काव्य में मानवतावाद २६२
डॉ. संतोष विजय येरावार
९६. "किन्नरों के संघर्षपूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति" (चित्रा मुद्गल कृत 'नाला सोपारा' के संदर्भ में) २६५
प्रा. डॉ. बेवले ए. जे.
९७. दौड : आधुनिक जीवन में उत्पन्न (अंतहीन दौड का संवेदनात्मक चित्रण) २६८
डॉ.गजाला वसीम अब्दुल बशीर शेख
९८. आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विमर्श २७०
सुरेखा एस. लक्कस
९९. आधुनिक हिन्दी साहित्य में मनोविज्ञान और कल्पना २७३
प्रा.निर्मला लक्ष्मण जाधव
१००. हिंदी आत्मकथा में स्त्री २७५
डॉ. रिना आर. सुरडकर
१०१. जनसंचार माध्यमों में हिंदी विज्ञापनों का महत्त्व २७७
डॉ. अमानुल्ला शेख
१०२. हिंदी कहानियों में नारी विमर्श २७९
डॉ. शेख एन. डी.
१०३. विश्व के विविध देशों में हिंदी की दिशा एंव दशा २८१
डॉ. दत्तात्रय नानासाहेब फुके
१०४. भूमंडलीकरण और हिंदीउपन्यास २८४
प्रा. सुभद्रा कुमारी सिन्हा

PRINCIPAL
Arts,Comm...
College,Ashti Tal.Ashti Dist....

RESEARCH JOURNEY Internationl Multidisciplinary E-Research Journal ISSN : 2348-7143
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | Special Issue 145 : Recent Trends in English, Marathi and Hindi Language and Literature February 2019

आधुनिक हिंदी साहित्य में दलित विमर्श (प्रेमचंद के संदर्भ में)

प्रा. पठाण जयनुल्लाखान
हिंदी विभागाध्यक्ष, कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी, जि. बीड

साहित्य सृजन में समाज का बडा योगदान होता है क्योंकि साहित्य में समाज का ही चित्र चित्रित किया जाता है। समाज में अनेक प्रकार की जातियाँ और उन जातियों की अपनी एक संस्कृति होती होती है। इन जातियों मे भी उच-निच, छुत-अछुत, सवर्ण-दलित आदि वर्ग भेद किए जाते हैं। भारतीय संस्कृती में चातुर्वर्ण्य व्यवस्था का बोल बोला रहा है, जिनमें स्त्री तथा क्षुद्र जातियों को हीन भवना से देखा गया है। आज समाज बदल रहा है, इस बदलते समाज में शिक्षा प्राप्त कर ऐसी जातियों ने अपना एक मुकाम बनाया है। इन जातियों में जन्मे और पढ-लिखकर ज्ञान प्राप्त किए लोगों ने अपने दुःख दर्द की दास्तान - कविता, आत्मकथा, कहानी, नाटक, लेख-निबंध आदि के माध्यम से व्यक्त करने की जो कोशिश की उस साहित्य को दलित, आदिवासी, स्त्री, किन्नर, किसान आदि विमर्शो से जोडा गया और आधुनिक भारतीय साहित्य में एक नया मोड आया। दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभुमि में मनुस्मृति के नीति-नियमों का नकार तथा संवैधानिक प्रावधानों का स्वीकार दिखाई देता है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर व्दारा दिए गए अधिकारों को प्राप्त करने की अदम्य इच्छाशक्ती इस वर्ग के साहित्य में दिखाई देती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में दलित विमर्श यह कोई नई बात नहीं है। महात्मा कबीर, संत नामदेव, गुरु नानक तथा तमिलनाडु के अलबार संतों ने मध्यकाल में इसके विरोध में आवाज उठाई। परिणामस्वरूप इन्हे भक्ति के क्षेत्र में प्रवेश प्राप्त हुआ, पर अछुत कहने से कोई बाज नहीं आया। आर्थिक, शैक्षिक व सामाजिक दृष्टी से इनमे कोई परिवर्तन नही आया। जातिय विषमता जैसी की तैसी ही रही, परिणाम स्वरुप इस मनुज विरोधी परंपरा मे जहाँ कही सें विषमता के विरोध मे चिंगारी मिलती है, उसे दलित साहित्य ने स्वीकारा है । उत्तर मध्यकाल में महात्मा ज्योतिबा फुले, महात्मा गांधी, गोपालकृष्ण गोखले, महाराज राजर्षि शाहु, महाराज सयाजीराव गायकवाड आदि लोगो में जाति तथा वर्ण के नाम पर फैली सामाजिक विषमता के प्रति जबरदस्त चीड थी। पिछडी तथा दलित जातियों को उनका सम्मान प्राप्त कराने में आपका सक्रीय योगदान रहा। डॉ. आंबेडकर को विदेशी शिक्षा दिलवाने में महाराज शाहु तथा गायकवाड का ही आर्थिक सहयोग रहा। शिक्षा प्राप्त कर लौटे डॉ. बाबासाहब ने मनुज विरोधी व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाते हुए दलितोध्दार के प्रयत्न किए। मानवीय मूल्यों की रक्षा की दृष्टी से देश की अर्थ रचना हो तथा यहाँ के सामाजिक आन्दोलन हो, तथा साहित्य सर्जन भी इन्ही मूल्यों की रक्षा हेतु हो, ऐसा उनका मानना था। सार्वत्रिक विकास करने के लिए उन्होने घ्पढोङ, घ्संगठित हो जाओङ, और घ्संघर्ष करोङ ये तीन सुत्र दिए।

दलित साहित्य की नींव - में ये तीन सुत्र है इसमे घ्अस्मिताङ, घ्स्वाभिमानङ, और घ्स्वतंत्रताङ सह मूल्य स्थायी रुप में दिखाई देते है।

दलित साहित्य की शुरुवात - वैसे हमने पहले ही देखा है कि दलितों के प्रति सहानुभूति एवं आध्यात्मिक अधिकार दिलाने में कबीर, संत नामदेव तथा गोपलकृष्ण गोखले, महात्मा ज्योतीबा फुले, राजर्षी शाहू आदि प्रभूतियों का महत्वपुर्ण योगदान रहा। तत्पश्चात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने संवैधानिक अधिकारों की बात करते हुए इन्हे सामाजिक एवं सांस्कृतीक प्रवाह में लाते हुए इनके लिए केवल मंदीर प्रवेश ही नही प्रशासनिक, राजनीतिक और सामाजिक कार्यो में हिस्सा दिलाते हुए शैक्षिक उन्नती की और आग्रेषित किया। परिणाम स्वरुप पढे-लिखे लोगों में से कुछ लोगों ने अपनी आपबिती को, आत्मकथाओं के माध्यम ये व्यक्त किया। आधुनिक दलित साहित्य की शुरुआत सबसे पहले मराठी से हुई माना जाता है। इनमे बाबूराव बागुल, दया पवार, लक्ष्मण माने, डॉ. लिंबाळे आदि की आत्मकथाएं काफी सराही गई तथा साहित्यिक पुरस्कारो से सम्मानित की गई। इन्ही आत्मकथाओं ने हिंदी अनुवाद के माध्यम से हिंदी ही नही अन्य भाषाओं में भी प्रवेश करते हुए धुम मचा दि। डॉ. रणसुभे के शब्दो में च्जब इन मराठी रचनाओं के हिंदी अनुवाद छपने लगे, तो उससे प्रेरणा लेकर हिंदी में दलित अनुभूति व्यक्त होने लगी। इस दृष्टि से ओमप्रकाश बाल्मीकि की आत्मकथा घ्जुठनङ का अत्यधिक महत्व है। हिंदी में दलित साहित्य की शुरुआत इसी कृति से होती है। छ

हिंदी भाषा और दलित विमर्श - आधुनिक गद्य साहित्य में प्रेमचंद का नाम हमेशा ही अमर रहेगा। आपने तिलस्मी, अय्यारी और किस्सागोई कथा साहित्य को एक नया मोड दिया। प्रेमचंद में एक प्रगतिशील लेखक छिपा हुँआ था। वे हिंदू समाज में फैली हुई ऊँच-निच और अछुत समस्या को लेकर काफी परेशान थे। अतः इस समाज को नींद से जगाना चाहते थे - कितनी बुरी हालत है हमारे हिंदु समाज की। आदमी को आदमी नहीं समझा जाता। एक आदमी के छु जाने से दूसरे आदमी की जात चली जाती है। यह क्या जिंदा कौमों के लक्षण है? घ्कलम का सिपाहीङ घ्अमृतराय पृष्ठ ४३-४४ तत्कालीन समाज की इस बिमारी का ईलाज उन्होने अपनी कथा कहानियो के माध्यम से करना चाहा। इसीलिए हम उन्हे हिंदी में दलित विमर्श पर लिखनेवाला पहला साहित्यकार कहे तो गलत नही होंगा।

आपके व्दारा लिखे उपन्यास तथा कहानियों मे ऐसे कई उपन्यास और कहानियाँ है, जो दलित, किसान, स्त्री, (वेश्या) विमर्श पर लिखी गई है। आपका घ्गोदानङ, किसान विमर्श का जीता-जागता

प्रतिक है। घ्सेवा सदनङ व घ्निर्मलाङ स्त्री तथा वेश्या विमर्श का उद्घाटन करते हैं तो घ्कर्मभूमीङ पूर्ण रूप से दलित विमर्श से जुडा उपन्यास है। कहानियों की बात करे तो घ्पुस की रातङ, घ्सद्गतिङ, घ्गुल्ली डंडाङ, घ्दूध का दामङ, घ्ठाकुर का कुँआङ, घ्घासवालीङ, घ्सौभाग्य के कोडेङ, घ्कफनङ, और घ्आगा-पिछाङ इन कहानियों मे हरिजन, चमार, भंगी जैसी दलित जातियों का संघर्षरत जीवन-चित्रण करते हुए प्रगतिशीलता के दर्शन कराए गए है। प्रेमचंद का जन्म हिंदुओ के तीर्थस्थल काशी के नज्दीक घ्लमहीङ में हुआ था। आपने सुवर्ण जाति व्दारा दिए जानेवाले अमानुष व्यवहारों को नज्दीक से देखा था और एक साहित्यकार होने के नाते इन दलितों के उद्धार के लिए काफी कुछ लिखना अपना परम कर्तव्य समझा। इसके लिए आपको सुवर्ण जातियों की भली-बुरी बांते भी सुननी पडी, पर आप टस-से-मस नहीं हुए। कुछ उदाहरणों व्दारा आपके दलित विमर्स से जूडे मुद्दो को निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है।

दुध का दाम कहानी में उच्चकुलीन जमींदार महेशनाथ की पत्नी की प्रसुती गांव की भंगीन मूँगी के हाथों होती है। मूँगी महेशनाथ की पत्नी को दूध न आने के कारण दाई और दुध - पिलाई बाई के रूप में कार्य करती है। अपने बच्चे मंगल को भूखा रख जमींदार पूत्र सुरेश को दूध पिलाती है। एक दिन सांप काटने से मर जाती है। अब मंगल अनाथ हो जाता है। दूध के दाम के रूप में उसे जमीदांर की झुठी पत्तलो का खाना खाकर जीवन जीना पडता है। कोई साथी खेलने न मिलने पर जमींदार के लडके के साथ मजबूरन खेलना पडता है और खेल में चूक - भूल होने से कोडे खाने पडते है। इस कहानी में उच्चवर्णीयों की खुदगर्जी तो देखिए। जरुरत पडने पर एक अछुत से ही प्रसुती करवाना और उच्च कुल में जन्मे वच्चे को अछुत का दूध पिलाना तथा खेलने के लिए साथी न मिलने पर अछुत को साथ लेकर खेलना। क्या! इससे इनका धर्म भ्रष्ट नही होता? इस खूदगर्जी की सफाई तो देखिए च्यह सत्य है, वह कल तक भंगीन का रक्त पीकर पला।छ

ठाकुर का कुँआ में प्रेमचंद ने दलितो में चेतना उभारते हुए गंगी के मुख से कहलवाया है कि, च्हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच है?छ पानी के लिए भी इन्हे तरसना पडता है। कुँओ को छुए तो इनका पानी अछुत हो जाता है। पर दलित स्त्री के साथ सम्बन्ध बनाने से इनकी जाति अछुत नही होती। कहानी का जोखू दलित जाति का होने के कारण उसे गंदे कुंओ का बदबूदार पानी पीकर मर जाना पडता है।

घ्घासवालीङ कहानी में दलित स्त्री की व्यथा और उच्च वर्णीय समाज के घिनौनेपन के विरुध्द आवाज उठाई है। महावीर चमार की पत्नी मुलिया काफी सुंदर स्त्री है जिसे गाव के पुरूष वासनाभरी निगाहों से देखते है पर वह किसी को घास नहीं डालती। चैनसिंग उस पर फिदा है अत: एक दिन वह उसका हाथ पकड लेता है। मुलिया को इस बात पर रोना आ जाता है और वह अपनी दलित चेतना को उभारते हुए किसी दिन चैनसिंह को फटकारते हुए कहती है च्अगर मेरा आदमी तुम्हारी औरत से इसी तरह बाते करता तो तुम्हें कैसा लगता? मुझसे दया माँगते हो, इसलिए न कि मैं चमारिन हूँ, नीच जाति की हूँ और नीच जाति की औरत जरा-सी घुडकी-धमकी या जरा-से लालच से तुम्हारी मुठ्ठी में आ जायेगी। कितना सस्ता सौदा है। ठाकुर हो ना, ऐसा सस्ता सौदा क्यों छोडने लगे?छ

घ्सौभाग्य के कोडेङ कहानी में भी उच्चवर्णीय समाज की खुदगर्जी दिखाई देती है। नथुवा भंगी जाति का है जिसे ख्रिश्चन पकड ले गए थे जहाँ पर वह एक अच्छी जिंदगी जी पाता पर रायसाहब उसे अपने घर, नौकर के रूप में ले आते है। लेखक, रायसाहब की खुदगर्जी का पर्दाफाश करते हुए कहते है - च्उनके कमरों की सफाई मिशन पाठशाला की पढाई से बढकर थी। हिंदु रहे, चाहे जिस दशा में रहे। ईसाई हुआ तो फिर सदा के लिए हाथ से निकल गया।छ नथुआ झाडु लगाते-लगाते रायसाहब की लडकी रत्ना के पलंग पर सो जाता है। रायसाहब के हंटर खाता है और भागकर अपनी बिरादरी में चला जाता है और वहा गान मंडली में अपना गाना गाकर सुनाता है। मंडली में उपस्थित उस्ताद धूरे उससे प्रभावित हो उसे विधिवत संगीत शिक्षा देते है। संगीत के साथ-साथ वह अन्य विषयो में भी अपनी प्रखर बुध्दि का परिचय देता है और समाज का भुषण हो जाता है। अब उससे कोई नहीं पूछता कि उसकी जाति कौन सी है। रायसाहब की माली हालत खराब हो जाती है और उनकी मुलाकात संगीत आचार्य (नथुआ) से होती है, जिसे वह उच्चकुलीन समझते है और अपनी बेटी रत्ना से उसका विवाह करवा देते है। यहाँ पर आचार्य (नथुआ) अपनी जाति के बारे में बताना चाहता है पर, वे इस बात को टाल देते है।

डॉ. बाबासाहब ने अंतर्जातिय विवाह को मान्यता देते हुए कहा था कि अंतर्जातिय विवाह खून के रिश्तों में बदल जाते है, इससे जाँति-पाँति का भेद मिटता है। इसी बात को इस कहानी में तरजीह दी गई है, ऐसा कहा जा सकता है।

इस प्रकार प्रेमचंद तथा हिंदी के साहित्य में दलित विमर्श को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है और लिखा जा रहा है। आजादी प्राप्त होने के ७० वर्षो बाद भी ग्रामिण क्षेत्रों में दलितो पर होनेव-ाले अत्याचार रूके नही है। इसलिए आज भी दलित समाज अपने हक प्राप्त करने के लिए छट पटा रहा है। परिणामस्वरुप आधु. हिंदी साहित्य में दलित लेखकों के साथ दलितेतर साहित्यकार भी दलित विमर्श को लेकर लिख रहे है। विस्ताराभय के कारण यह बात यही समाप्त करते हुए निष्कर्ष पर आते है।

निष्कर्ष - उपर्युक्त विवेचन के बाद हम कह सकते है कि :

* विद्रोह और नकार दलित साहित्य की सही पहचान है।
* दलित साहित्य केवल दलितों की ही नहीं शोषित, सर्वहारा और श्रमिकों की भी बात करता है।
* जनतंत्र में अपने अधिकारों की मांग करने के लिए, एक बेहतर जिंदगी जीने के लिए छटपटाने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है।
* समाज में हीन दृष्टि से देखा जाना, सवर्णो की बस्तियों से बाहर रखा जाना, प्रताडित और बलत्कारीत किया

ISSN : 2348-7143
February 2019

जाना आदि बातों का घ्पोस्टमार्टमड है, दलित साहित्य।

* स्वतंत्रता, समता, बंधुता की भावना को व्यक्त करते हुए अपनी अस्मिता की पहचान करवाना, दलित साहित्य का महत्वपुर्ण सोपान है।
* दलित साहित्य दलितों के प्रति ही नहीं, संपुर्ण मानवता के प्रति सहानुभूति जगाते हुए वेदना.और पीडा को शब्द देता है और वेदना / पीडा देने वालो के प्रति आवात ऊठाता है।
* स्वतंत्र भारत की गणतंत्रीय व्यवस्था में नीचले तबके के श्रमिक, सर्वहारा, दीन–हीन, दलित समाज को विशेषाधिकार प्राप्त कराने के लिए आंबेडकरी विचारों के साथ–साथ मार्क्स का भी समर्थन करता है, यह दलित साहित्य ।

साभार संदर्भ ग्रंथ :

१) आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे
२) कलम का सिपाही – अमृतराय
३) मान सरोवर कहानी संग्रह भाग १ प्रेमचंद
४) मान सरोवर कहानी संग्रह भाग २ प्रेमचंद
५) गुगल नेट ब्राउसर

PRINCIPAL
Arts Commerce & Science
College, Ashti Tal.Ashti Dist.Beed

Ashti Taluka Shikshan Prasarak Mandal's

Arts, Commerce and Science College, Ashti

Tal. Ashti, Dist. Beed (MS)

Accredited by NAAC at B++ Grade with 2.78 CGPA, ISO 9001:2015 Certified

Affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

A Two-Day National Seminar on 'Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India'

14th & 15th September 2019

: Sponsored by :

National Assessment and Accreditation Council, Bangalore

Certificate

This is to certify that

Dr. Pathan Jainullakhan MD Hayatkhan

From

Arts, Commerce and Science College, Ashti, Dist. Beed

Participated and

Presented a paper entitled

Role of IQAC in Higher Educational Institute

in Two Day National Seminar on

"Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India"

organized by Internal Quality Assurance Cell (IQAC),

Arts, Commerce and Science College, Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed (M.S.)

on 14th & 15th September 2019

Dr. A. B. Shinde
Co-ordinator, IQAC

Principal
Adv. B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed

Dr. S. R. Nimbore
Principal & Convenor

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 193 (B) : Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India
ISSN : 2348-7143
September-2019

Role of IQAC in Higher Educational Institute

Prof. Pathan Jainullakhan Md. Hayatkhan
Arts, Commerce & Science College,
Ashti Tal. Ashti Dist. Beed
Mob. 9423471560

Introduction:-

As per guidelines of national assessment and accreditation council (NAAC) proposed that every Indian educational institute should establish an Internal Quality Assurance Cell (IQAC) for performance evaluation, assessment, accreditation & quality improvement. Since quality enhancement is continues process. The IQAC will become a part of an integral part and is working towards realizing the goals of academic excellence an ensuring quality higher education in India (HEI). The prime task of the IQAC is to develop a system for conscious, consistent and catalytic improvement in the performance of institution and to make significant and meaningful contribution to improve the academic and administrative performance of the institution.

Objectives of IQAC :-

1) To ensure timely efficient progress administrative and financial tasks.
2) To maintain relevance in academic and non-academic programmes.
3) Access to other stakeholders in society.
4) To promote ICT based teaching in colleges and Universities.
5) Use of transparent evaluation process/method.
6) To stress in support services, like-N.S.S, life-long learning & extension, earn & learn, annual gathering, blood donation, student-parents meet, pani foundation etc.

Description :-

The success of IQAC depends upon the sense of belongingness and participation. IQAC is a statutory, facilitative and participative system of the institution. The IQAC has to ensure that whatever done in the institution for "Higher Education" is done efficiently and effectively at self-defined standards and devoid of mistakes of all kind. So the IQAC needs to establish procedures and modalities to collect data and information by using the probes on the different parameter. IQAC is acting as a vehicle for ushering in quality by working out intervention strategies to remove deficiencies an enhance quality.

The establishment of Internal Quality Assurance cell (IQAC)by accredited institutions (after the first cycle) is a major step in pushing long-term quality standards. IQAC in any institution is a significant administrative body that is responsible for all quality matters. It is the prime responsibility of IQAC to initiate, plan and supervise various activities that are necessary to increase the quality of the education imparted in in an institution or college & University. the role of IQAC in maintaining quality standards in teaching, learning and evolution become crucial and the present research is therefore undertaken on a scale to determine the exact status and functioning of IQAC and its outcome. The present research falls under the purview of quantitative research and hence quantitative methods, such as data collection, analysis, comparison, tabulation and illustration, are used.

Conclusion :-

IQAC focuses on institutional functioning towards quality enhancement and facilitate internationalization of the quality culture. It maintains enhancement

ISSN : 2348-7143
September-2

visible impact on academic development as well as administration. At a time when our educational institutions are expected to perform as good as their global partners, significant technological innovations have to be adopted. Traditional methods of delivering higher education have become less motivating to a large number of students. To keep pace with the development in other spheres of human endeavor, HEI_s have to enrich the learning experiences of their students by providing them with state-of-the-art educational technologies. The campus community must be adequately prepared to make use of Information & communication Technology optimally, conscious effort is also needed to invest in hardware & to orient the faculty suitably.

Conclusion:

NAAC arranges periodic assessment & accreditation of higher educational institutions for quality maintenance . It provides specific academic programmes & enriches academic environment for promotion of quality in teaching – learning & research in higher education institutions. It also motivates for self evaluation, autonomy & innovations in higher education. It undertake quality related research studies, consultancy & training programmes. It enhances collaboration with other stakeholders in society by providing sustainable parameters. In short we can say that, NAAC plays an important role in overall progress of the higher educational institutions.

References :

1. Globalization & Indian Higher Education university News vol. 48 kiran (2010)
2. Higher Education in a globalizing world. New Delhi, Isha books. Pandey V.C. (2005)
3. NAAC- A Decade of dedication to quality Assurance, Stella Dr. Antony, 2004
4. Accreditation & Higher education : What do you need to know? Venable, Melissa (2011)

Principal
Adv. B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed

National Assessment and Accreditation Council Bengaluru

and

Anand Charitable Sanstha Ashti's

ANANDRAO DHONDE ALIAS BABAJI MAHAVIDYALAYA, KADA

Tq. Ashti. Dist. Beed - 414202 (MS)

NAAC 'A' Grade (3.11 CGPA) **Organized** ISO 9001:2015 Certified.

National Seminar

On

NAACs Revised Accreditation Framework and Quality Improvement Strategies in Higher Education.

Certificate

This is to certify that Dr. / Mr./ Mrs. Pathan J. M. of Adv. B. D. Hambarde College Ashti has participated / presented a paper entitled A Role of ICT in Higher Education in Two- Day National Seminar During 20th & 21st Dec. 2019 On NAACs Revised Accreditation Framework and Quality Improvement Strategies in Higher Education organized by IQAC, Anandrao Dhonde Alias Babaji Mahavidyalaya, Kada Tq. Ashti. Dist. Beed - 414202 (MS).

Place : Kada
Date : 21/12/2019

Dr. B. S. Khaire
Convener

Principal
Adv. B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed

Prin. Dr. H. G. Vidhate
Chief Organizer

Anand charitable sanastha, Ashti's
Anandrao Dhonde Alias Babaji Mahavidyalaya, Kada
(Arts, Commerce & Science)
Tal. Ashti, Dist. – Beed, 414202 (MS)
Phone No. 02441-239621
Email: admkada@gmail.com
Website : www.admakada.com

NAAC A Grade with 3.11 CGPA | ISO 9001:2015 | Principal Dr. H. G. Vidhate

Ref. No. ADMK/ 2019-2020

Date: 21 / 12 /2019

RELIEVING LETTER

This is to certify that, Prof. /Dr. Pathan J. M.

College Adv. B.D. Hambarde College Ashti has attended two day National Seminar on "*Revised Accreditation Framework and Quality Improvement Strategies in Higher Education*" organized by our college on 20th -21st Dec. 2019.

He/ She is relieved on 21st December, 2019 after the seminar.

PRINCIPAL
Anandrao Dhonde Alias Babaji College
Kada, Tal. Ashti, Dist. Beed

Principal
Adv. B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December-2019 Special Issue – 209

NAAC : Revised Accreditation Framework and Quality Improvement Strategies in Higher Education

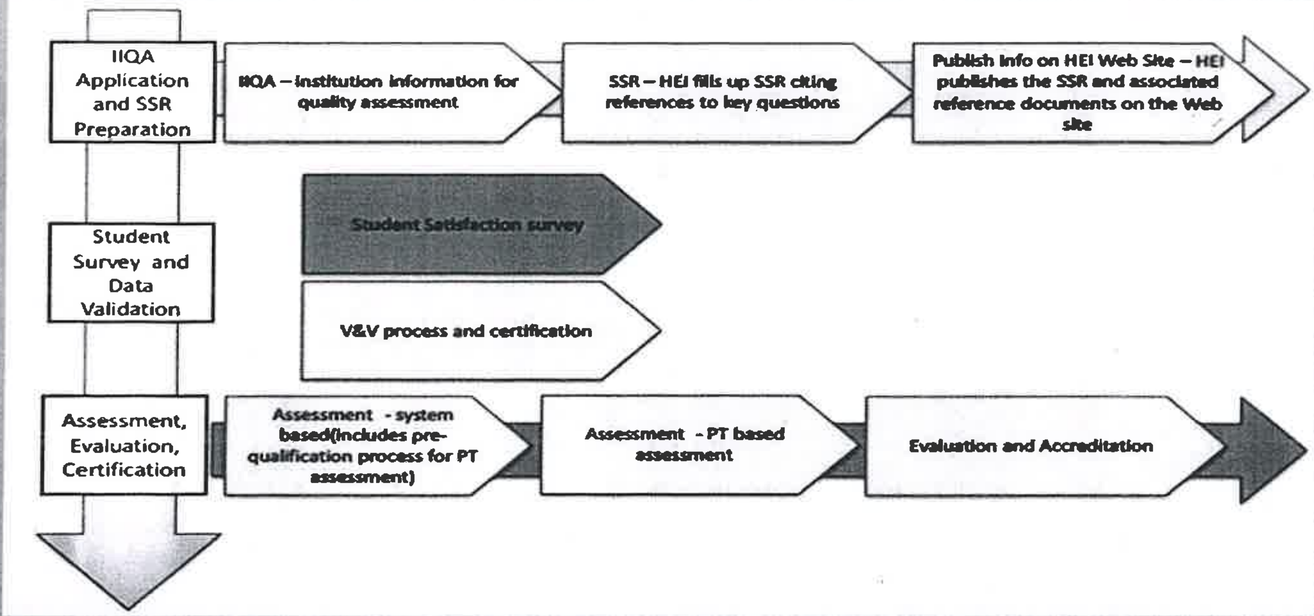

Guest Editor :
Prin. Dr. H. G. Vidhate
Principal,
Anandrao Dhonde Alias Babaji Mahavidyalaya,
Kada, Tq. Ashti, Dist. Beed. 414202
[M.S.] India

Executive Editor:
Dr. B. S. Khaire
Co-ordinator, IQAC
A.D. Alias Babaji Mahavidyalaya,
Kada, Tq. Ashti, Dist. Beed. 414202
[M.S.] India

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

Principal
Adv. B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Peer Reviewed Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019)
Special Issue : 209
NAAC : Revised Accreditation Framework
ISSN : 2348-7143
December-2019

The Role of ICT in Higher Education

Prof. Jainullakhan Pathan
Associate Prof. Dept. of Hindi
Arts, Commerce & Science College, Ashti
Tal. Ashti Dist. Beed. Mob – 9423471560
E-mail: Jainullapathan@gmail.com

Abstract:-

ICT is a systematic, technological and engineering discipline and management technique use in the world of information ICT stand for information and communication Technologies. It is a part of daily life and it can be used by teacher, students, academicians, researchers and administrators. It can focuses on ICT based system in classrooms and labs by teachers and students. The paper also suggests the role of importance of ICT based education in 21st century and the role of government and education system around the world, towards ICT in based education.

Introduction:-

Technology has become an important mediam of education and learning process. It is needed to solve human problems in more productive way. Educational institution need to concentrate on adopting such technologies. Snyder and Green (2000) refer this as workability principle. There is a question often asked that, what educational problem needs addressed ? This question is always asked by decision makers through teacher planning and programme like a school administrator purchasing hardware and software to an educational system officer developing planning and strategically. As a teacher level this question can be answered by I am satisfied? with the educational opportunities and I am able to offered children in school children. Teacher should never be satisfied and will strive to do better. Many educators and commentators believe that computers became more affordable in school, colleges and universities. So it has become responsibility of each teacher, to motivate each learner and facilitate to use computers for progress in various field.

Objectives and advantages of ICT:-

1. To provide technological greater and easier access in information to allow access.
2. To computers and internet to every individual those who haven't their own computers.
3. To give access to digital learning and study material with both quality and quantity.
4. To provide staff expertise to seek out information or learning material.
5. Sharing of cost and training time with employees.
6. Development of new learning resources.

On one hand there is ably digital revolution in technology and on the other hand a teacher centric method is being in classroom teaching through it has become boring and traditional for the students so we need to brake this monotony and focus on modern ways of communication in classroom by having knowledge of multimedia and ICT. Impact of ICT teaching and learning process.

It helps in replacing the world technology and teacher can better understand the student if subject preparation is done through ICT.

It is useful in increasing the uses of hardware and software process for teaching-learning process.

It can build innovative ideas which leads to motivate teaching. It is required for professional development and educational management in institutions.

ICT inspires the teachers to polish and enhance there skills and prepared students for building their carriers in future. It has multiple functions like data-collection, research, case-studies, video-lectures and assignment preparation in classrooms. ICT pledge significant role in students evaluation and reduces the communication gap between teachers and students. Educational institution can also design their curriculum by using ICT.

Maximum numbers of teachers is using of computer to prepare teaching plans and have adequate knowledge of software such as ERP, TALLY, ETC to teach the students effectively. The institutions are providing suitable facilities in terms of white-board, smart-board, multi-media support, teaching-learning process. The teaching staff have ample knowledge ICT based technology to spread knowledge among students. Higher institution are replacing traditional teaching aids with modern ICT tools. Classroom lectures can be made more innovative through ICT and students can be motivated to learn new concepts and application. In administrative works, efficiency can also be increase by giving training session on ICT to administrators. It also provide security to teachers and administrators in maintaining their confidential records. While students can have the facility have online registration and access their records online. Communication can be made easy through the internet. So the burden of keeping hard-copy is reduced by having maintenance of data record in soft copy through ICT.

Conclusion:-

The findings have concluded that teachers have strong commitment and interest towards use of ICT for improving teaching and learning process and these finding suggest that training of teachers on ICT has become an important elements for teachers so that they can become regular users of ICT based technology which enhances their ICT skills and will improve the standard of higher education in India. We can also conclude that maximum factors are positively influencing the teacher's use of ICT in education. Therefore there should be proper mechanism of training of teachers and they are to be convinced for successful adoption of ICT in their curriculum for enrichment and improvement. As far as recommendations are concerned more amount of money should be invested in adoption of ICT and its tools for guidance and support and higher education .Finally motivate and reward the teachers to use ICT and transformation of positive attitude towards usage of ICT practises. At last my opinion about ICT in higher education is the increasing use of information and communication technologies ICT has brought changes to teaching and learning at all levels of higher education system leading to quality enhancements. Traditional forms of teaching and learning are increasingly being converted to online and virtual environment. There are endless possibilities with the integration of ICT in the education system. The use of ICT in education not only improves classroom teaching- learning process but also provides the facility of e-learning. ICT has enhanced distance learning. ICT enabled education will ultimately lead to the democratisation of education.

ISSN : 2348-7143
December-2019

References :-

1. Larsen, K. and vincent- Lancrin, S (2005). The impact of ICT on tertiary education: Advances and promises. A paper presented at the organisation for economic co-operation and development (OECD) | NSF | U. Michigan Conference "Advancing Knowledge and the Knowledge Economy". 10-11 Jan 2005 Washington DC.
2. Balanskat cat A; Blamire, R. and Kefala. S (2006) The ICT Impact Report : A review of studies of ICT impact on school in Europe. European schoolnet, extracted from http://colccti.colfinder.org/sites/default/files/ict_impact_report_o.pdf
3. Bhaurao, P.B. (2015) . Role of ICT in Indian digital education system. Indian Streams research journal, 5(2), 1-5.
4. Machin, S. et al. (2006) "New technologies in schools : Is there a pay off ?" . Germany : Institute for the study of Labour. Accessed at : http://ftp.Iza.org/dp2234.pdf#search=%22New%20technologies%20in%20school%3A%201S%20there%20a%20Pay%20off%3F%20%22

Principal
Adv. B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed

Ashti Taluka Shikshan Prasarak Mandal's

Arts, Commerce and Science College, Ashti

Tal. Ashti, Dist. Beed (MS)

Accredited by NAAC at B++ Grade with **2.78** CGPA, ISO 9001:2015 Certified

Affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

A Two-Day National Seminar on 'Women Empowerment through Entrepreneurship and Skill Development'

3rd & 4th January 2020

: Sponsored by :

National Commission for Women, New Delhi

Certificate

This is to certify that

प्रा. पठाण जयनुल्लाखान

From

ॲड. बी. डी. हंबर्डे महाविद्यालय, आष्टी, जि. बीड

Participated and

Presented a paper entitled

साहित्य और समाज में महिला सशक्तिकरण विमर्श

in Two Day National Seminar on

'Women Empowerment Through Entrepreneurship and Skill Development'

organized by Internal Quality Assurance Cell (IQAC),

Arts, Commerce and Science College, Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed (M.S.)

on 3rd & 4th January 2020

Prof. Niwrutti Nanwate	**Prof. Shubhangi Khude**	**Dr. S. R. Nimbore**
Coordinator, IQAC	Convener	Principal

Principal

Adv. B.D. Hambarde Mahavidyalaya

Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019)
Special Issue : 212 (B)
Women Empowerment
ISSN : 2348-7143
January-2019

साहित्य और समाज में महिला सशक्तिकरण विमर्श

प्रा. पठाण जयनुल्लाखान
ॲड. बी.डी. हंबर्डे महाविद्यालय आश्टी जि.बीड
भ्रमणध्वनि ९४२३४७१५६०
jainullapathan@gmail.com

प्रस्तावना

प्राचीन भारत में नारी को शक्ति का प्रतीक माना जाता था। वैदीक युगीन भारतीय नारियों को धर्म, शिक्षा, राजनीति, उत्तराधिकार से जूडे वे सभी अधिकार प्राप्त थे किन्तु उत्तर वैदिक काल में वह कम होते गए। उत्तर वैदिक युग में महिलाओं को धार्मिक तथा सामाजिक अधिकारों से वंचित किया जाने लगा। तीसरी शताब्दी से लेकर ग्यारहवी शताब्दी तक अनेक ग्रंथो का निर्माण हुआ और 'मनुस्मृती' धर्मग्रथ के आधार पर भारतीय महिलाऍ सामाजिक एवं धार्मिक रुप से संकीर्ण विचारधारा का शिकार बन गई। अब वह 'गृहलक्ष्मी', 'माता' और 'शक्तिपुंज' की जगह 'याचिका', 'सेविका' तथा 'अबला' के प्रतीक रुप में देखी जाने लगी। मध्ययुग (१६ वी से १८ वी शताब्दी) में तो वह केवल 'भोग्या' के रुप में ही देखी गई। मुगल शासनकाल में महिलाओं पर काफी प्रतिबंध लादे गए, जबकि अंग्रजो के शासन में भी यही स्थिति देखी जा सकती है, परंतु इसके लिए भारतीय रुढी–परंपराऍ भी उतनी ही जिम्मेदार मानी जा सकती है। यहॉ तक आते–आते भी, महिलाओं को शिक्षा का अधिकार प्राप्त नहीं था, कुछ चुनिंदा नारियॉ ही अपने बलबुते पर इस अधिकार को प्राप्त कर पाई थी, जैसे राणी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले, सरोजिनी नायडु आदि। इन शोशीत–पिडित महिलाओं कों उनके अधिकार के प्रति जागुरुक करने का कार्य कुछ समाजसुधारकों और साहित्यकारों व्दारा हुआ। इस समय भारतीय महिलाओं को सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक तथा राजनीतिक दृश्टी से निर्योग्य माना जाता था। इसी पृश्ठभूमि में भारतीय महिला सशक्तीकरण की पृश्ठभूमि तैयार हुई और अब उसे वह अधिकार प्राप्त हुए, जिसे प्राप्त कर उसमें एक नयी लहर दौड उठी। अब वह 'पिटती' नही है, 'पिटती' भी है,'भूखी' नही रहती 'भूखा' रखती भी है, 'तलाक' नही लेती, 'तलाक' देती भी है। अन्याय सहती नही, उसका विरोध भी करती है। इन सब बातो के पीछे महिलाओं को प्राप्त अधिकार तथा अन्याय के खिलाफ लडने के कानून कारागर सिध्द हुए है।

विशय–प्रवेश –

आधुनिक युग में जब हम नारी विमर्श तथा नारी सशक्तिकरण की बात करते है तो मैथिलीशरण गुप्त की पक्तियां ''अबला जीवन हाय, तेरी यही कहानी। ऑचल में है दूध और ऑखो मे पानी।'' सरासर गलत साबित होती है। आजकी नारी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा साहित्यिक दृश्टी से देखा जाए तो अब वह नारी 'मध्ययुगीन नारी' से बिल्कुल अलग 'आधुनिक नारी' के रुप में उभरकर सामने आती है। किन्तु सवाल यह उठता है कि क्या? आज भी वह अपने वह अधिकार प्राप्त कने में सफल है, जिससे कि वह अपने आपको समाज सुरक्षित महेसूस करे। इन्ही प्रश्नो के उत्तरों का हल है 'महिला सशक्तिकरण'।

भारतीय समाज में नारी

प्रस्तावना तथा विशय प्रवेश के अनुसार देखा जाए तो भारतीय समाज और साहित्य में आजकी नारी का चित्रण शोशीत रुप में ही दिखाई देता है। क्या? आज भी वह अपने अधिकारों के लिए दर दर रही है

क्या? आज भी वह अत्याचार सह रही है?, क्यो? इन प्रश्नो के उत्तर ढूँढना आवश्यक हो जाता है। जिन्हे नीचे दिए मुद्दो से स्पश्ट किया जा सकता है।

समानता का अधिकार

भारतीय संविधान में महिला और पुरूशो को समानता का अधिकार प्राप्त है। भारतीय 'महिला' कानून की दृश्टि से 'पुरूशो' के समान ही है। उसे वे सभी अधिकार प्राप्त है जो पुरूशो को है। आज वह हर क्षेत्र में आगे बढ रही है। क्या, नारी सशक्त हो चुकी है? 'नही' आज भी नारी अशक्त है, अन्याय सह रही है, बल्तकारीत हो रही है। न्याय के लिए छट–पटा रही है। यही कारण है कि हमें नारी सशक्तिकरण के लिए अनेकों प्रयास करने पडेगे, तभी जाकर नारी सशक्त हो पायेगी। शासन तथा साहित्य के माध्यम से ऐसे कई प्रयास हो रहे है। गरज है कि नारी अपने अधिकारों को जाने और उस पर अमल करे, तभी यह सफल हो पायेगा। अत: स्वयं नारी को निम्नलिखित बातों पर विचार करना आवश्यक है।

शिक्षा ग्रहण :

शिक्षा केवल देश का ही नही, शिक्षा ग्रहण करनेवाले का भी विकास करती है। भारत में महिलाओं को अक्सर शिक्षा से वंचित रखा जाता है। शिक्षा के अभाव में वह अपने अधिकारों को समझ नहीं पाती है और अन्याय का शिकार होती है। भारतीय समाज पितृसत्ताक होने के कारण केवल लडकों को ही शिक्षा दी जाती है, जबकी लडकियों को जुरुत के हिसाब से ही पढाया जाता है। उसे 'पराया धन' समझकर शिक्षा से वंचित रखा जाता है। अत: राश्टीय शिक्षा नीति से उन्हे अवगत कराना आवश्यक है, ताकि राश्ट के विकास में उनका योगदान प्राप्त हो सके।

दहेज प्रथा :–

भारतीय समाज में 'दहेज' प्रथा एक घुन के समान घर चूकी है। इस प्रथा के चलते नारी शोशित हो रही है। जबकि भारत सरकार ने दहेज प्रथा को लेकर नारी सरक्षण का कानून बनाया है। जब भी शादी की बात होती है, तब दहेज को लेकर ही विचार विमर्श होता है और कमी–बेशी हो जाए तो नारी का शोशन होता है। चिरकाल से चली आरही दहेज प्रथा और दहेज प्रतिबंध कानून से उसे अवगत किया जाना चाहिए। दहेज न देने के कारण उस युवती का विवाह किसी वृध्द व्यक्ति से करा दिया जाता है, और असमय ही वय विधवा का रुप धारण कर शोशीत होती है। अत: हर एक शिक्षित नारी को चाहिए कि वह दहेज का विरोध करे और मनचाहा वर पाए।

यौन हिंसा, लैगिंग भेद भाव :–

हमारे समाज में यौन हिंसा आम हो चुकी है। जहॉ जवान लडकी अगर कुछ नया करे तो उसे हिंसा का शिकार होना पडता है। फिर स्वंय हमारा परिवार भी जिम्मेदार होता है। हम बचपन से ही लडके और लडकियों में भेद करते आएं है। जहॉ लडको को आर्थिक तथा शैक्षिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है, वहॉ लडकियों को इससे रोका जाता है और भेदभाव की नीति अपनाई जाती है।

असमानता तथा निर्धनता

निर्धनता का सम्बध अर्थ से है। हमारी आर्थिक नीतियां इतनी चरमरा गई है कि अमीर वर्ग अमीर और गरीब वर्ग गरीब होता जा रहा है। इसका सबसे अधिक असर महिला वर्ग पर देखा जाता है। साहित्य में ऐसी कई कथाएं मिलेगी जहॉ अपने पती व्दारा ही पत्नी को काम पर भेजना या वेश्यावृत्ति करने के लिए मजबुर

किया जाता है। निर्धनता तथा आर्थिक असमानता इसका मुख्य कारण है। रांगेय राघव के 'घरौदे' उपन्यास में इसका सुंदर चित्रण हुआ है। धन प्राप्त करने के लिए जब कोई स्त्री किसी पुरूश से यौन सम्बंध स्थापित करती है तो उसकी यह क्रिया वेश्यावृत्ती कहलाती है, लेकिन जिस पुरूश की कामवृत्ती को तृप्त करने के लिए नारी को यह नीच कर्म करना पडता है उस पुरूश को समाज में नीच नही माना जाता, पर उसे तृप्त करने वाली नारी नीच समझी जाती है। 'घरौदे' की नादानी यही सवाल उठाती है "तुम नदी में नहाते हो, मगर तुम तो गंदे नही होते, उल्टे बहनेवाली नदी गंदी हो जाती है। क्या न्याय है तुम्हारा?"

आर्थिक स्वतंत्रता

मातृसत्तात्मक युग से पितृसत्तात्मक युग तक पहुचते पहुचते समाज में नारी का स्थान बराबर बिगडता गया है। समाज तथा परिवार के शोशन के व्यवहार को वह इसलिए सहती आई है कि उनके आगे अपनी जीविका और खासकर अपने बच्चो के जीवन का प्रश्न होता है। अब अगर यह आर्थिक सवाल सुलझ जाए तो स्त्री पुरूशो में समानता की स्थापना होगी। अत: नारी को आर्थिक रुप से स्वावलंबी बनना आवश्यक है।

सांस्कृतिक बंधन तथा नीति नियमो का प्रभाव

भारतीय समाज की नारी चाहे कितनी भी प्रगती करले किन्तु बचपन से ही उसके मन में पति परमेश्वर तथा धार्मिक नीति नियमो के संस्कार किए जाते है। विवाह के बाद चाहे वह नौकरी पेशा हो या घरेलु महिला हो, उसके मन से यह विचार निकलने का नाम नही लेते। परिणामस्वरूप वह आजादी से ना अपने विचार प्रकट कर सकती है और ना किसी चीज का विरोध करती है। यहाँ यह कहेना उचित होगा कि भारत की दिवंगत पंतप्रधान श्रीमती इंदिरा गांधी १८ घण्टे तक रोजाना कार्य करने के बावजुद भी अपनी सुबह की चाय व नाश्ता (आमलेट) स्वयं बनाया करती थी, ऐसा उन्होने स्वयं (इंडिया टुडे को) दिए साक्षात्कार में कहा है। इन सभी परिस्थितियों मे जहाँ एक तरफ ऑफीस के कार्यभार दूसरी तरफ घर के तमाम कार्यो की व्यस्तता की वजह से एक महिला के लिए अपना स्वास्थ और मानसिक सन्तुलन बनाये रखना मुश्किल होता जा रहा है। यही कारण है कि महिलाओं को आज दोहरी जिंदगी जीनी पड रही है, अत: सशक्तिकरण की आवश्यकता है!

निश्कर्श

उपरोक्त विवेचन के बाद हम निश्कर्श रुप में कह सकते है पिछले कुछ वर्शो में महिला सशक्तिकरण के कई प्रयास हुए है। भारत मे महिला सशक्तिकरण के लिए सन १९९० मे 'राश्टीय महिला आयोग अधिनियमन' के तहत राश्टीय महिला आयोग का गठन किया गया। राज्यो में राज्यस्तर पर भी इस प्रकार के आयोग गठित किए गए है। इसी का परिणाम है कि महिलाओं की जीवनशैली में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले हैं। इनसे उनके व्यवहार, मूल्य, संवेदनाएँ तथा प्रेरणा–शक्ति ही प्रभावित नहीं हुई है, बल्कि आज वे जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में पुरूशो के कंधे से कंधा मिलाकर भागीदारी कर रही है।

सामाजिक परिवर्तन के घूमते चक्र के कारण ही महिलाओं को परंपरागत रूढिवादी भूमिका से काफी हद तक मुक्ति मिल गई है, हालॉंकि इस प्रक्रिया में विभिन्न कानूनी प्रावधानों ने भी सकारात्मक भूमिका निभाई हैं। अब महिलाएँ मात्र गृहिणी की ही भूमिका तक सिमटी नहीं है बल्कि अधिपत्य जवाबी औ परिपक्व स्त्री के रुप में सहज देखी जा सकती हैं। बदलते युग में सामाजिक विचारधारा एवं व्यवस्था में बदलाव के कारण महिलाओं के प्रति पुरुशो की सोच बदल रही है और महिलाओं को आगे बढने के अवसर मिल रहे हैं। परिवार में महिलाओं के बारे में अब उनकी रचनात्मक सोच बन रही है। घर के काम काज एवं निर्णयों में पत्नी की

भागीदारी बढ रही है। आज महिलाएँ पुरशो के बराबर राजनीति, विज्ञान, कृशी, राज्य सेवा, सुरक्षा, शांति, शिक्षण, शिक्षा के क्षेत्र में बढ–चढकर कार्य कर रही हैं।

महिलाओं की मानसीकता मे आज काफी बदलाव आ रहा है। अन्धविश्वास, रूढिवादी विचारधारा की भयावहता को वह समझने लगी है। लेकिन अशिक्षित महिलाएँ अभी भी इनसे ग्रसित है। ढोंगी एवं पाखंडी लोग अन्ध–विश्वासो के व्दारा महिलाओं को ठगते एवं देह–शोशन करते रहे हैं। ऐसी अनेक घटनाएँ समय समय पर सुनने व देखने को मिलती है। आवश्यकता बस इस बात की है कि शिक्षित जागरुक महिलाओं को चाहिए कि वे अपने अधिकार स्वयं जाने और अशिक्षितो को भी उससे अवगत कराएँ। कवयित्री निर्मला पुतुल ने अपनी कविता के माध्यम से आदिवासी नारी की पीडा को धारदार अभिव्यक्ती दी है। आदिवासी स्त्रियाँ कई स्तर पर शोशन की शिकार है। उनकी इस काव्य पंक्तियों से मै अपने शोध–निबंध को समाप्त करना चाहूँगा।

"धरती के इस छोर से उस छोर तक / मुठ्ठी भर सवाल लिए मै / दौडती –हॉफती–भागती / तलाश रही हुँ निरंतर / अपनी जमिन, अपना घर / अपने होने का अर्थ।" निश्चित रूप से कह सकते है कि इस आधुनिक युग में भी महिला अपनी स्वरक्षा एंव अपने अस्तित्व को लेकर असुरक्षित ही है।

सहायक संदर्भ–ग्रंथ सूची :–

१. "समाजवादी हिंदी उपन्यासो मे चरित्रांकन" – डॉ. नास्ति कुमार, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा (१९९७)
२. "महिला सशक्तिकरण" – कमलेश कुमार गुप्ता, प्रकाशक – बुक एनक्लेव, जयपुर (२००५)
३. "महिला एंव कानून" – चेतन मेहता, आशीश पब्लिशिंग हाउस ८/८१, पंजाबी बाग, नई दिल्ली – २६ (१९९६)
४. "भारतीय महिलाएँ शोशण, उत्पीडन एवं अधिकार" – कमलेश कुमार गुप्ता – बुक एनक्लेव, जयपुर (२००५)
५. "महिला विकास एक परिदृश्य" – स्वप्निल सारस्वत, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली (२००५)
६. "समकालिन भारतीय साहित्य" (पत्रिका) जुलाई – अगस्त २०१९, अंक २०४

Principal
Adv. B.D.Hambarde Mahavidyalaya
Ashti, Tal. Ashti, Dist. Beed